ख़ास ख़ोज-ख़बर

रहस्यमयी पत्थर ने सबको चौंकाया

यहां अचानक दिखाई दिया रहस्यमय गोल पत्थर, वैज्ञानिक भी पहेली में उलझे!

● मंथन विदेश ब्यूरो

प्राग। चेक रिपब्लिक की राजधानी प्राग के एक इलाके में रहस्यमयी पुराने गोलाकार पत्थर को देखकर पुरातत्वविदों की टीम भी चौंक गई। खोज के बाद बताया गया कि यह पत्थर सात हजार साल पुराने हो सकते हैं। हालांकि, अभी इस बारे में और भी रिसर्च की जा रही है। दुनिया में इतने ज्यादा रहस्य छुपे हैं, जिनकी कल्पना भी लोग नहीं कर पाते हैं। कई बार इतनी ज्यादा पुरानी चीजों की खोज हो जाती है, जिसे देखकर पुरातत्वविद भी हैरान रह जाते हैं। ऐसा ही कुछ चेक रिपब्लिक के प्राग में मिला है, जिसपर दुनिया भर के लोगों की नजरें टिक गई हैं। दरअसल, प्राग में स्टोनहेंज और मिस्र के पिरामिडों से भी पुराने स्टोन राउंडेल (गोल आकार का पत्थर) की खोज की गई है। पत्थर के आसपास खुदाई में भी कई ऐसी प्राचीन चीजें मिली हैं, जिनको लेकर भी सटीक जानकारी जुटाई जा रही है।

पुरातत्वविदों का कहना है कि इसका निर्माण स्टोन एज के समय में करीब 7 हजार साल पहले हुआ होगा। हालांकि, इसे क्यों बनाया होगा, इसका अभी तक कारण नहीं पता चल पाया है। चेक एकेडमी ऑफ साइंस के पुरातत्व विभाग के जारोसलव रिद्की ने रेडियो प्राग इंटरनेशनल से बातचीत में बताया कि राउंडेल (एक तरह

का गोलाकार पत्थर) पूरे यूरोप में आर्किटेक्चर का सबसे पुराना सबूत है।

180 फीट है पत्थर की चौड़ाई

खास बात है कि इस गोलाकार निओलिथिक स्ट्रक्चर की चौड़ाई करीब 180 फीट है, जो पीसा की मीनार से भी ज्यादा लंबा है और इसके तीन द्वार हैं। खास बात है कि साल 1980 में ही इस इलाके में गैस और पानी की लाइन डालते समय मजदूरों ने ऐतिहासिक राउंडेल की खोज कर ली थी। लेकिन अब करीब 40 सालों के बाद इसकी खोज पूरी तरह की गई है।

खोज करने वाली टीम को लीड कर रहे पुरातत्वविद मिरोसलव कराउस ने इस बारे में रेडियो प्राग इंटरनेशनल से बताया कि स्टोन एज के दौरान ही इन राउंडल्स का निर्माण किया गया है। यह उस समय के हैं, जब लोहे की खोज भी नहीं हुई थी। पुरातत्वविद ने बताया कि उस समय पर इसे एक आर्थिक और व्यापार केंद्र की तरह इस्तेमाल किया होगा। या यह एक धार्मिक पंथ का केंद्र भी हो सकता है। वहीं पुरातत्वविद जारोसलव रिद्की ने लाइव साइंस को बताया कि राउंडेल बनाने वाले लोगों के बारे में कम ही जानकारी मिल सकी है। रिद्की के अनुसार, इसे बनाने वाले मिट्टी की कला से जुड़े लोग थे, जो 4900 बीसीई से 4400 बीसीई तक एक्टिव रहे थे।

प्राग के अलावा भी कई जगह निर्माण

पुरातत्वविद रिद्की ने बताया कि इन्हीं लोगों ने चेक रिपब्लिक के बोहेमिया इलाके में भी ऐसे ही राउंडेल्स का निर्माण किया था। इन लोगों के ऐसे ही करीब 200 उदाहरण सेंट्रल से ईस्टर्न यूरोप तक भी देखे जा सकते हैं। पिछले कुछ सालों में ड्रोन की मदद से हवा में ऊंचाई से की गई फोटोग्राफी से भी दूसरे राउंडेल उदाहरणों को पहचानने में काफी मदद मिली है। अब इस नए गोलाकार पत्थर की खोज के दौरान जब खुदाई की गई तो कई खास चीजें भी इसके नीचे दबी हुई मिलीं। इनमें मिट्टी के बर्तनों के टूटे हुए टुकड़े, जानवरों की हड्डियां और पत्थरों से बने हथियार शामिल हैं। पुरातत्वविदों का कहना है कि कार्बन डेटिंग की मदद से इन सभी चीजों के निर्माण की सही तारीख और पता चल जाएगा कि यह अवशेष पास के ही निओलिथिक सेटलमेंट से जुड़े हुए हैं।

चीनी वैज्ञानिक हे जियानकुई का दावा

अब दुनिया में कोई नहीं होगा बूढ़ा! चीन के इस 'पागल' वैज्ञानिक ने खोज निकाला तोड़, एक्सपर्ट ने कहा- ये तो पागलपन है

● मंथन विदेश ब्यूरो

बीजिंग। दुनिया में बहुत ही कम लोग होंगे या ना के बराबर होंगे, जो चाहेंगे कि उनकी उम्र तेजी से बढ़े या वो जल्दी बूढ़ा हो जाएं। सभी हमेशा जवान और एक्टिव रहना चाहते हैं। अधिकांश लोग अपनी बढ़ती उम्र को लेकर चिंतित रहते हैं। क्योंकि वो खुद को बूढ़ा नहीं देखना चाहते हैं। ऐसे में एक चीनी वैज्ञानिक हे जियानकुई ने दावा किया है कि उन्होंने एक ऐसी खोज की है, जिससे इंसान की बढ़ती हुई उम्र को रोका जा सकता है और बूढ़ा होने से बचाया जा सकता है। वैज्ञानिक ने खुलासा किया कि साल 2018 में उन्होंने पहला जीन-एडिटेड बच्चा बनाया था।

जियो न्यूज की रिपोर्ट के मुताबिक जियानकुई को अवैध चिकित्सा पद्धतियों के लिए तीन साल की जेल की सजा भी हो चुकी है। जेल से बाहर आने के बाद उन्होंने हेल्थ प्रोफेशनल के लोगों को उस समय चौंका दिया, जब उन्होंने ऐलान किया कि वह बीजिंग में एक रिसर्च प्रयोगशाला खोल रहे हैं। तब से जियानकुई ने जीन थेरेपी द्वारा दुर्लभ बीमारियों के इलाज पर ध्यान केंद्रित किया हुआ है। हालांकि उनके नए रिसर्च प्रस्ताव ने एक बार फिर विवाद खड़ा कर दिया है। जो विशेषज्ञों के मुताबिक यह भी उनके पहले के काम की ही तरह है। जियानकुई के इस रिसर्च की आलोचना की गई है। साथ ही इसे अनैतिक और खतरनाक बताया गया है, जिसमें मानव डीएनए को

प्रभावित करने की क्षमता थी। चीनी वैज्ञानिक ने देश पर जनसंख्या की बोझ का हवाला देते हुए तेजी से लोगों के तेजी से बूढ़े होने के बारे में लिखा है कि बुढ़ापे की आबादी एक सामाजिक, आर्थिक मुद्दा और चिकित्सा प्रणाली पर दबाव दोनों के रूप में गंभीर महत्व रखती है। प्रस्ताव में कहा गया है कि गर्भावस्था के लिए किसी भी मानव भ्रूण को प्रत्यारोपित नहीं किया जाएगा और प्रयोग से पहले सरकारी अनुमति की आवश्यकता होगी। विशेषज्ञों का मानना है कि जियानकुई का यह प्रस्ताव वैज्ञानिक दृष्टि से निराधार है। उनके शोध का हवाला देते हुए, चीनी सरकार ने जीन संपादन और उससे जुड़े नैतिक पहलुओं को विनियमित करने के लिए कदम उठाए। सिंगापुर में नानयांग टेक्नोलॉजिकल यूनिवर्सिटी के एसोसिएट प्रोफेसर पीटर ड्रोगे ने कहा, 'स्पष्ट रूप से कहें तो पूरी बात पागलपन भरी है।'

स्पेशल खबर

मिर्च सूंघकर ही लड़की अस्पताल पहुंच गई

एक मिर्ची ने लड़की को पहुंचा दिया कोमा में! 6 महीने से पड़ी है अस्पताल के बेड पर, लौटने की उम्मीद नहीं...

● मंथन विदेश ब्यूरो

ब्राजील। आपने लोगों को चीज़ें खाने के बाद एलर्जी होते हुए सुना होगा लेकिन एक लड़की के साथ कुछ अलग ही हादसा हुआ। अपने देश में मसालेदार चटपटे खाने की बात आते ही जो चीज़ें दिमाग में आती हैं, उनमें खट्टी चीज़ों के साथ तीखी मिर्ची भी शामिल होती है। घर का खाना हो या फिर बाहर का ज़ायका, बिना मिर्ची के कुछ पूरा ही नहीं होता है। वो बात अलग है कि कुछ लोग ऐसे भी होते हैं, जिन्हें मिर्ची से एलर्जी भी होती है। हालांकि एलर्जी खाने से होती है लेकिन हम आपको एक ऐसी लड़की की कहानी बताएंगे, जिसे मिर्ची सूंघकर ही मरने की नौबत आ गई।

इंसान के शरीर से ज्यादा कॉम्प्लेक्स कोई चीज़ शायद ही इस दुनिया में होगी। इसमें कब, क्या चीज़, किस तरह से रिएक्ट कर जाए, कुछ कहा नहीं जा सकता है। एक इंसान को जो चीज़ फायदा करती है, दूसरे के लिए वो जानलेवा बन जाती है। ऐसा ही हुआ एक लड़की के साथ जिसके लिए मिर्च सूंघना इतना महंगा पड़ा कि वो 6 महीने से अस्पताल में ही है।

मिर्ची सूंघकर पहुंची कोमा में!

ब्राज़ील में रहने वाली थायस मेडेइरोस नाम की लड़की ने एक बेहद तीखी मिर्च सूंघ ली थी। उसकी मां ने बताया कि खाना बनाने में वो उनकी मदद कर रही थी। इसी बीच उसकने तीखी मिर्ची को सूंघ लिया और नाक पर इसे रगड़ भी लिया। न्यूयॉर्क पोस्ट की रिपोर्ट के मुताबिक मिर्ची सूंघने के बाद उसके दिमाग में गंभीर सूजन आ गई। इस घटना के बाद वो कई दिन तक कोमा में भी रही। उसे बीच में अस्पताल से डिस्चार्ज भी किया गया था, लेकिन तेज़ बुखार आने के बाद फिर से उसे भर्ती कराया गया और इस बार उसे फेफड़ों में जकड़न की समस्या हुई। थायस की मां ने बताया कि पहले से ही उसे ब्रोंकाइटिस और अस्थमा जैसी बीमारियां थीं।

6 महीने से है अस्पताल में: ये दुर्घटना इसी साल फरवरी महीने में घटी थी। उसे 31 जुलाई 2023 को डॉक्टरों ने घर भेज दिया था, लेकिन दोबारा भर्ती करने के बाद से वो ये नहीं बता पा रहे हैं कि थायस को कब तक छुट्टी मिल पाएगी। थायस को मिर्ची सूंघने के बाद खुजली होने लगी थी और वो पहले नज़दीकी अस्पताल में गई। यहां मामला कंट्रोल नहीं हुआ तो उसे दूसरे अस्पताल में ले जाया गया, जहां डॉक्टरों ने इसे एडिमा की समस्या कहा, जिसमें दिमाग में सूजन आ जाती है। फिलहाल वो न तो बोल पा रही है न ही चल पा रही है।

इलाके के लोग इस बात से परेशान है कि आखिर कौन व्यक्ति पथराव कर रहा है या फिर कोई अदृश्य शक्ति इस कांड में शामिल है

यहां रात होते ही लोगों के घरों में बरसने लगते हैं ईंट और पत्थर, आखिर कौन फेंक रहा? बना है रहस्य...

● मंथन खोजी संवाददाता

कोरबा। कोरबा के मोतीसागर पारा वार्ड के अंतर्गत एक बस्ती में पिछले कुछ दिनों से घरों पर पथराव की घटनाएं हो रही है। इससे अब तक कई लोग चोटिल हो चुके हैं। इस घटनाक्रम से पूरी बस्ती में अजीब तरह का भय बना हुआ है। हैरान करने वाली बात यह है कि अब तक पथराव करने वालों का कोई पता नहीं चल सका है।

इलाके के लोग इस बात से परेशान है कि आखिर कौन व्यक्ति पथराव कर रहा है या फिर कोई अदृश्य शक्ति इस कांड में शामिल है। ऐसा भी नहीं है की चुनिंदा घरों में ही पत्थर और ईंट के टुकड़े गिर रहे हैं बल्कि इनका दायरा पूरा

इलाका ही है।पथराव होने की घटना में अब तक कई लोगों को चोट भी आई हुई है और इन कारणों से अब क्षेत्र में डर की भावना को मजबूती मिल रही है।

मोतीसागर पारा में जिस तरह के मामले कुछ दिनों से हो रहे हैं उसे लोगों का परेशान होना स्वाभाविक है। लोग कहते हैं कि उन्होंने किसी को पत्थर फेंकते हुए ना तो देखा है और ना ही जाना है। ऐसे में संदेह किस पर करें भी तो कैसे। इसलिए अब इस इलाके में निगरानी करने की योजना बनाई गई है।

---मंथन दृष्टि विज्ञापन दरें---

फुल पेज ब्लैक एण्ड व्हाइट	=	38000 रूपए
फुल पेज कलर	=	60,000 रूपए
हॉफ पेज ब्लैक एण्ड व्हाइट	=	19,000 रूपए
हॉफ पेज कलर	=	30,000 रुपए
क्वार्टर पेज ब्लैक एण्ड व्हाइट	=	10,000 रूपए
क्वार्टर पेज कलर	=	15,000 रुपए

नोट :-
1. ब्लैक एण्ड व्हाइट विज्ञापन का भुगतान 42 रूपए प्रति वर्गसेमी की दर से रहेगा।
2. कलर विज्ञापन का भुगतान 65 रूपए प्रति वर्गसेमी की दर से रहेगा।

ख़ास साप्ताहिक फ़ोटो

इस मंदिर में भगवान कृष्ण और रुक्मिणी ने द्वारका की यात्रा के दौरान कुछ समय के लिए विश्राम किया था

बोलती तस्वीर अरुणाचल प्रदेश में मालिनीथान मंदिर के साथ-साथ आकाशगंगा मंदिर के रूप में भी जाना जाता है, यह पूर्वोत्तर भारत में देखने के लिए एक अद्भुत पुरातात्विक स्थल है। अरुणाचल प्रदेश में यह मंदिर अपनी स्थापत्य सुंदरता और नक्काशी के लिए काफी प्रसिद्ध है। मंदिर में देवी दुर्गा का वास है और लोग बड़ी संख्या में मंदिर में आते हैं। यह मंदिर 14 वीं से 15 वीं शताब्दी का है लेकिन पुरातत्व की खुदाई से यह 20 वीं शताब्दी में मनुष्यों के सामने आया। इस मंदिर के बारे में इतिहास कहता है कि इस मंदिर में भगवान कृष्ण और रुक्मिणी ने द्वारका की यात्रा के दौरान कुछ समय के लिए विश्राम किया था। उस समय, देवी पार्वती ने उनका स्वागत किया और उन्होंने रुक्मिणी को मालिनी कहकर संबोधित किया, इसीलिए इस मंदिर को मालिनीथान मंदिर के नाम से भी जाना जाता है।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक डॉ. रजत सक्सेना द्वारा जेयन ऑफसेट वर्क्स, 119, पुल बोगदा, भोपाल (म.प्र.)-462023 से मुद्रित एवं म.न. 31, सेक्टर-1, शक्तिनगर, भोपाल, मध्यप्रदेश-462024 से प्रकाशित। प्रधान संपादक डॉ. रजत सक्सेना, संपादक- महेश प्रताप जड़िया, सभी विवादों का न्यायक्षेत्र भोपाल न्यायालय रहेगा।